REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

# अखाना छप्पामां कटाक्ष अने द्रष्टांत कला

प्रा. महेन्द्र के. नाइ
भवन्स श्री आइ. अेल. पंडया आर्टस &
श्रीमती जशोदाबेन शाह कोमर्स कोलेज, डाकोर.

**प्रस्तावना –**

कोइपण साहित्य सर्जकनो धर्म आत्म–अभिव्यक्तिनो होय छे, अन्य होतो नथी. कोइपण सर्जक निजानंद खातर लखे छे. जेम स्त्रीमां मातृत्वनी झंखना सनातन होय छे, तेम साहित्यकार पण आंतरिक सर्जकवृत्तिने संतोषवा माटे साहित्यनुं सर्जन करे छे. दरेक साहित्यकार पोतानी कल्पना षक्तिने लेखे लगाडी सर्जन करे छे, परंतु अेनी प्रेरणानां मूळ तो आसपासना समाज अने संसारमां ज पडेला होय छे. अेने साहित्य सर्जन माटे जीवननो आधार तो लेवो ज पडे छे. केमके आखरे तो दरेक सर्जक अेना समयनुं संतान होय छे. आम, साहित्य जीवननुं प्रतिबिंब बने छे जोके अे प्रतिबिंब खरुं, परंतु अे मात्र प्रतिबिंब ज नथी. अे अेक प्रेरक परिबळ पण बने छे. साहित्य जीवन घडतर पण करे छे. मानव जगतनां कादव–कीचडने पखाळे छे. जीवन मूल्यो पोषे छे, विकसावे छे. जन जीवननो साचो पडघो पाडवा उपरांत ते जन समाजने प्रेरणा आपनारी दिव्यवाणी पण बनी रहे छे. कहो के हरेक सर्जको धर्म जीवनाभिमुख बनीने ध्येयलक्षी–प्रगतिषील बनवानो छे. साहित्यकारनो धर्म जे–ते युगनी अेषणाओने वाचा आपीने जन जीवनने घडवानो रहयो छे, सर्जको आ रीते 'युग धर्म' बजावता रहया छे. साहित्य आ रीते प्रतापी परिबळ बनी रहे छे कहेवुं जोइअे के जीवनपंथनी गरज सारे अेवुं साहित्य समये–समये सर्जयुं छे.

मध्यकालीन पद्यसाहित्यनुं वस्तु विषय द्रष्टिअे वर्गीकरण करीअे तो अेमां आध्यात्मिकविदानुं अनुभवज्ञान निरुपती पद्यधारानो अेक अविच्छिन्त स्रोत प्रापत थाय छे आ पद्यधाराने साहित्यना इतिहासकारोअे ज्ञानमार्गी के ज्ञानाश्रयी काव्यधारा तरीके बहुधा ओळ खावी छे. पुस्तक नही पण पंडनो अनुभव, आ परंपराना कविओनी मोटी मूडी छे. अेथी अेमनी साधना षास्त्रसंमत नहि, पण अनुभव संमत साधना तरीके ओळखावी घटे. अखो आ धारानो प्रमुख कवि मनायो छे. गुजराती साहित्यमां ज नही देषना मध्यकालीन साहित्यमां आखानो अवाज अनोखो छे जो कोइनी साथे क्यारेक अेनो अवाज मळतो आवतो होय तो ते कबीरना ब्रह्मललकार आवे. मध्यकाळमां कबीर अने अखानी जोडी तरत ध्यान खेंचे छे.

दरेक सर्जकनुं अनुभव जगत अेना सर्जनने ताकतुं होय छे, घटतुं होय छे. अखाना जीवनमां बनेला मर्मदायक आघातो–अनुभवो जेवा के, जुवानीमां पितानुं मृत्यु बहेननुं अवसान, पत्निनुं अवसान, बीजी पत्निनुं मृत्यु, धर्मनी मानेली बहेननी षंका, टंकषाळानो अरोप, अने जीवनमां अन्य अनुभवोअे अखाना कवनने घाट आप्यो छे, अे नही नोंधवुं जोइअे.

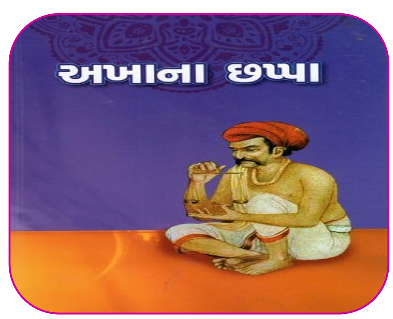


अखाना छप्पाना नामे प्रकाषित छप्पा षास्त्रीय द्रष्टि छप्पा नथी ते तो छ चरण वाळी चोपाइ छे. जयारे 'अनुभवबिंदु'मां अखाअे पोते जेने छप्पा कहया छे ते षास्त्रीय द्रष्टिअे साचा छप्पा छे. गुजरातमां अखानी विषेष प्रसिद्धिनुं मुख्य कारण छे. तेना छप्पा अखाना छप्पामां रोळा–उल्लला छंदनो प्रयोग होइ अेवा पिंगळ षास्त्रीय छप्पा नथी. आतो छ चरण वाळी चोपाइ छे. आ प्रकारनी षट्पदी चोपाइना अथवा चोपाइना छ चरणना

अेकमनो प्रयोग अखाना पूर्वे मांडण बंधाराअे 'प्रबोधबत्रीसी'मां कर्यो छे षक्य छे के अखाअे आ छंद प्रयागनी प्रेरणा मांडळ बंधारामांथी पण मळी होइ मांडणना उखाणां अने अखाना छप्पानुं बंधारण अेक सरखुं ज छे बंने चोपाइ छंद वापरे छे–बंने छ पंक्तिअे अेक कडी पूरी करे छे मांडणनुं काम बहुं व्यवस्थित छे. कवि करतां अे विषेष कोषकार छे. तेनो प्रधान उदेष्य प्रचलित कहेवतोनो संचय करवानो छे. जेमांथी साहित्यिक आनंद आपवानो उदेष पण सर थाय छे. अखाना छप्पामां मांडणनी सुव्यवस्थित रचा षक्तिनां दर्षन थता नथी. अमुक वस्तु सिद्ध करवी छे. अेवी प्रतिज्ञा साथे ग्रंथ लखवा अे बेठो नथी तेथी बनवा जोग छे के अनेक वर्षोना लांबा गाळामां छुटक छुटक रचायेला छप्पाओ भेगा करता आखा समूहने छप्पामां ज अव्यवस्था प्रवर्ते छे. अेवुं पण नथी ज अखाअे विषयवार विभागीकरण करी प्रत्येक विभागने 'अंग' नामथी ओळखाव्यो छे. अहीं त्रण कडीनुं अने बे कडीनुं अंग छे.

अखानी कृतिओमां छप्पा गुजराती साहित्यमां अमर लेखाय छे. छप्पामां अखाअे उच्च कोटिना गहन तत्वचिन्तनने सरळ बनाववानो प्रयास कर्यो छे. साथे–साथे तत्कालिन समाजनां तथा धर्मना पाखंड उपरा कोइवार उपर छल्लो तो कोइवार सुक्ष्म, कोइावर हळवो तो कोइावर तीखो धगधगतो कटाक्ष कर्यो छे. क्यारेक पोताना वक्तव्यने लोक सुगम अने चोटदार बनाववा मोटे भागे लोकजीवनमांथी उपमानो पसंद करीने मार्मिक द्रष्टांतो पण योजाया छे. कही षकाय के प्रमानंद खरी सिद्धि तेना रस निरुपणमां छे, तेम अखानी खरी सिद्धि तेना द्रष्टिांतोमां छे.

हवे आपणे अखाना छप्पामां कटाक्ष अने द्रष्टांत विषे जोइअे. अखा पोतानी वात धारदार बनाववा कहो के पोतानी वात कान सोंसरवी उतारवा माटे–पोतानुं धारेलुं निषान ताकवा माटे कटाक्ष अने द्रष्टांत सहारो लीधो छे. अहीं आपणे कटाक्ष अने द्रष्टांतने ताकवा केटलाक छप्पा जोइअे.

अखानी पूर्व जीवननी रचनाओ अेकला धार्मिक ज नही पण समग्र सामाजीक संस्थाओना दंभो सामे प्रहारात्मक टीका रुपे योजाइ हती. अेटले आरंभनी कृतिओमां उपहास अने कटाक्षना रुपे ज हास्य आपणने मळे छे. आ कटाक्षनो मर्म प्रहारनो अने अट्ठ हास्य पूर्वकना उपहासनो प्रकार खेडवामां अखो अजोड छे, अेना घणा नमूना लोक कंठे सांभळवा मळे छे. जेमके –

'तिलक करतां त्रेपन वह्यां, जप माळानां नाकां गयां'.
'कथा सुणी सुणी फाटया कान (६२८ अ–इ)
'अेक मुरखने अेवी टेव, पथ्थर अेटला पूजे देव.
'पाणी देखी करे स्नान, तुलसी देखी तीडे पान' (६२६ –अइ)
'कीर्तन गाइने तोडे तोर, अखो कहे जुवानीनुं जोर' (६६४)

आ पंक्तिओमांनो धारदार कटाक्ष जोइ षकाय छे. अखो दांत कचकचीने जाणे बोलतो होय अेवुं लागे छे. अखो आखा बोलो छे. पण लोकाद बोधनना कार्य माटे अेनी प्रगल्भता अने आखा बोलापणानी जरुर छे पोताना समयमां प्रवर्तता अनाचार, अत्याचार, दंभ, ढोंग, पाखंड, आडंबर ने खुल्ला पाडवा अखो मथ्यो छे. लोकजीवनमां रहेली अनेक क्षतिओना – त्रूटीओनी अखाअे कडक टीका करी छे. अज्ञान निंद्रामां पोढेली प्रजाने ज्ञानरुपी सूर्यनो प्रकाष देखाडी जाग्रत करवानुं अन जीवननो साचो राह देखाडवानुं काम अखाअे पयगंबरी आवेषथी कर्यु छे. ढोंगी धर्मगुरुओ, सामाजीक दंभ, पाखंड, सांप्रदायिकता झघडा, भक्तिनो आडंबर, जड मूर्ति पूजा, ऊंच–नीचना भेद, आभडछेड वगेरे अखाअे वाणीना कोरडा विंझया छे. जुओ :

'गुरु थइ बेठो होंसे करी, कंठे पहाण षक कयम तरी ?
पोते हरिने न जाणे लेष, बने काढी बेठो गुरु नो वेष,
अखाअे गुरु षुं मुके पार, जेना षिष्य गंदर्भ अने गुरु कुंभार ?'
'देहा भिमान हु तुं पाषेर, ते विद्या भणता वाध्युं षेर,
चर्चावादमां तोलुं थयो, गुरु थयो तां मणमां गयो.'
ऊंचनीचना भेद अखाने मान्य नथी – कहयुं के छे.
'श्वान श्वपच गौ ब्राह्मण जोय, राम थकी नहि अळगो कोय,

तत्व अेक अने चैतन्य अेक, नाम रुप गुण कर्म अनेक.'
'ऊंच खरारे ऊंच म जाण, नीचे ते नोहे नीच निर्वाण,
ऊंचामां राम बमणो नथी भर्यो, अने नीच पीड ठालो नथी कर्यो.'
'षबरी संस्कृत षुं भणी हती भाइ ? क्या वेद वाच्यां कर्मो बाइ ?
वयध ते षुं भण्यो'तो वेद ? गणिका षुं समजती भेद ?'
'राम रडवडता कहेने मल्यो ? घेलो ने घर सुखथी टल्यो.
अखा राम नथी घेर के वने, जाहां मळे तांहां पोताकने.'

आखाना वेधक कटाक्षोने अहीं परिचय थाय छे. अखो कोइवार अट्टहास्य करे छे, तो कोइवार टाढो टमको मूकीने खसी जाय छे. अेक वखते हाथमां कोरडो लइने उभेलो धूंवा–पूंवा थयेलो अखो देखाय छे, तो बीजी वखत जीवननी बे परस्पर कषा संबंध वगरनी चीजोने जोडाजोड मूकीने आपणने हसववानी फरज पाडतो टीखळी जेवो अे लागे छे. केटलेक ठेकाणे अे कटाक्ष 'सोफेटीक सेटायर' पयगंबरी कटाक्षनी कोटिनो छे. जेम के 'ऊंचमां राम बमणो नथी भर्यो' तो अधम कोटिनो कटाक्ष पण अेमां मळी रहे छे. जुओ : 'जेना षिष्य गदर्भ ने गुरु कुंभार' (६५५), बीजा गुरु ते लाग्या वरु' (३००) अहीं साहित्यिक परिभाषानी सगवडनो उपयोग करवानी लालचे ज कटाक्ष कही षकाय, छे तो तो सामा सामी ज !

अखो गमे तेवा सूक्ष्म मनोगतने जादुइ सरळताथी प्रत्यक्ष करी दे छे. अेमां अेनी चित्र रचवानी षक्तिनो ज द्रष्टांतथी आपे छे. जुओ

'अज्ञानी ने ऊंट–बचकुं, झाल्युं मुके नही मुख थकुं,
अखा अहाजाण्ये पेठुं कान्य, चाल्या पंथ दर्षनने मान्य.' (२६७)
'सगुण भक्ति मोती–घूघरी, मनमोहन ते दीसे खरी,
अंतर–तापे क्षुघा नव रामे, साहामा मनोरथा अदमा दमे.'
'सूंकुं ज्ञान ने व्यंडळ–मूछ, करपी घा, कूतरनुं पूछ,
अे चारेथीअर्थ न थाय साहामुं अे उाडे कांय.'
'ज्ञानीने कविता न गणेष, किरण सुरजना कयम वणेष ?
षबद केरोसढ कयम थाय ? आकाष ते कम तोल्यु जाय.'

अखाना छप्पा लोकजीभे रमवा लाग्या तेनुं कारण अेना वेधक कटाक्षो अने व्यवहार जीवनना द्रष्टांतो. अखानी वाणीनुं ओजस अने प्रबळ प्रवाह तेमज कविनी औचित्य भरी लयसूझ छप्पाने अनेरुं आकर्षण पूरुं पाडे छे. सादा घरघथ्थुं षब्दो अने लोकवाणी चलणी प्रयोगो छप्पामां ढगलाबंध छे. अखानी वाणीमां संक्षिपता, सरळता अने चोट थइ अेनी अनेक पंक्तिओ लोककंठे वसी जता लोकोक्तिनुं गौरव धारण करे छे. अेनुं कथन सीधुं अने सोसरुं छे अेनी वाणीमां बोलचालनी छटा छे. छप्पामां देखाती द्रष्टांतीनी भरमार अखाने 'गुजरातनो अग्रगण्य द्रष्टांत कवि' गणावानी आपणने फरज पाडे छे आ द्रष्टांत क्यारेक प्रश्नरुपे आवीने पण अलंकारनी गरज सारे छे.

अखानी वाणी लोकोक्तिनी कोटिअे पहोंचीने आजेय लोकजीभे रमे छे अखाना छप्पाना आधारे कवि अरदेषजी खबरदारे 'अखा भगताना छप्पा' जे प्रति काव्यो आप्यां छे, तेमां पण छप्पानी बानीगत विषिष्टतानुं ज आकर्षण जोइ षकाय छे, 'लोकोक्तिनी टंकषाळ अखाना जेवा गंजावर पाया पर भाग्ये ज कोइ सर्जक कविअे गुजरातमां खोली होय' उमाषंकर जोषीनुं आ विधान अहीं साचुं अने सार्थक बने छे आ उपरांत महुवा खाते योजायेल गुजराती साहित्य परिषदना ४र मां अधिवेषनमां स्वागत समिति तरफथी बे नाटक भजवाया हतां. (ता. २५/१२/२००३ नी रात्रे) जेमां मनोज षाह दिग्दिर्षित 'अखो आखा बोलो' (संकलन–लेखन: पा.कान्ति पटेल) भजवायुं हतुं. अे आजना समयमां अखानो अवाज केटलो प्रस्तुत छे, तेनो अंदाज आपे छे. अखाना षब्दोमां छप्पा विषे कहीष के 'झीलुं तो झेर दषधार'

## संदर्भ सूचि


१. अखानी काव्यकृतिओ खंड–१ सम्पादक – डो. षिवलाल जैसलपुरा
२. अखाना छप्पा–सम्पादक : उमाषंकर जोषी बीजी आवृत्ति – १०६२
३. गुजराती सा. नो इतिहास : ग्रंथ–२, खंड–१

प्रा. महेन्द्र के. नाइ
भवन्स श्री आइ. अेल. पंडया आटर्स &
श्रीमती जशोदाबेन शाह कोमर्स कोलेज, डाकोर.